पाठ 16

4SHSVA

क्या निराश हुआ जाय

(प्रस्तुत निबन्ध में निबन्धकार ने निराशा के स्थान पर सदैव आशावान रहने की प्रेरणा दी है।)

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति सन्देह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद पर हैं, उसमें उतने ही अधिक दोष दिखाये जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता। जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिये जायेंगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिल्कुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिन्ता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है, जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था? रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति-सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिन्दू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलन-भूमि ‘मानव महा-समुद्र’ क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

परन्तु ऊपर-ऊपर जो कुछ दिखायी दे रहा है, वह बहुत ही हाल की मनुष्य-निर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। सदा मनुष्य-बुद्धि नयी परिस्थितियों का सामना करने के लिए नये सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है। नियम-कानून सबके लिए बनाये जाते हैं, पर सबके लिए कभी-कभी एक ही नियम सुखकर नहीं होते। सामाजिक कायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते हैं, इससे ऊपरी सतह आलोड़ित भी होती है, पहले भी हुआ है, आगे भी होगा। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आन्तरिक तत्त्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बन्धन में बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है, परन्तु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाये गये हैं, जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परन्तु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन सब समय पवित्र नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

संशय सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाये गये, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गये। लक्ष्य की बात भूल गये। आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए क्षोभ का नतीजा है, परन्तु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखायी देने लगे हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अन्तर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और अध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गये हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार-पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं, जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में जाकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के

सेकन्ड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिये और बोला, ”यह बहुत गलती हो गयी थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।“ उसके चेहरे पर विचित्र सन्तोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गयी है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परन्तु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुक कर चलती थी। गन्तव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गये। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को सन्देह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरु कर दीं। किसी ने कहा, ”यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था।“ परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा, ‘हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।’ डर तो मेरे मन में भी था, पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है। परन्तु यात्री इतने घबरा गये कि मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, ‘इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।’

मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गये। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी।

लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं, पर उसे बस से उतार कर एक जगह घेर कर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो ड्राइवर को समाप्त कर देना, उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, ‘अड्डे से नयी बस लाया हूँ, इस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है’, फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा-सा दूध लेकर आया और बोला, ‘पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।’ यात्रियों में फिर जान आयी। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफ़ी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गये।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गयी! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-मया रह ही नहीं गयी! जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया हूँ, परन्तु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो जिनमें धोखा खाया है, तो जीवन कष्टकर हो जायेगा, परन्तु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण ही सहायता की है, निराश मन को ढाढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान् से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर सन्देह न करूँ।

मनुष्य की बनायी विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आये दिन इन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की सम्भावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है।

- हजारीप्रसाद द्विवेदी

पद्मभूषण से सम्मानित हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त सन् 1907 ई0 में बलिया के आरत दूबे का छपरा(ओझवलिया) नामक गाँव में हुआ था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिष में आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् ये शान्ति निकेतन में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हुए फिर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष रहे। द्विवेदी जी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकारों, समीक्षकों और सांस्कृतिक उपन्यासकारों में से एक हैं।'कबीर', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'सूर-साहित्य', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचन्द्रलेख', 'अनामदास का पोथा', 'अशोक के फूल', 'कुटज' आदि इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्यों की गहरी झाँकी है। इनका निधन 19 मई सन् 1979 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

गह्वर=गुफा। मनीषी=विचारक, विद्वान। भीरु=डरपोक। निरीह=असहाय, बेचारा। आस्था= विश्वास। विधि-निषेध=करने और न करने के नियम। आलोड़ित=उथल-पुथल, हिलोरें लेता हुआ। विकार=दोष। दकियानूसी=पुराने विचारों से चिपका रहने वाला, पुरातनपन्थी। पर्दाफाश करना=भेद खोलना। दोषोद्घाटन=बुराइयाँ बताना। अवांछित=अनचाहा। कातर मुद्रा=डरा हुआ रूप। वंचना=धूर्तता। विश्वासघात=विश्वास में धोखा। जवाब दे देना=खराब हो जाना। हिसाब बनाना=योजना बनाना। चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना=डर जाना। गन्तव्य=जहाँ किसी को जाना हो। परीक्षित=जाँचा-परखा। निकृष्ट=बुरा, नीच।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

इस पाठ में लेखक ने दो घटनाओं का जिक्र किया है। इन घटनाओं से क्रमशः 'टिकट बाबू' और 'बस के कंडक्टर' की ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा प्रकट होती है। इस तरह की

घटनाएँ हमारे समाज में प्रायः घटित होती रहती हैं। अपने साथ या आस-पास में घटित किसी घटना के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखिए।

विचार और कल्पना

1. अपने आस-पास या विद्यालय में घटी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जिसमें किसी ने किसी की निःस्वार्थ सहायता की हो।

2. आप परिवार सहित कहीं जा रहें हैं। निर्जन और सुनसान मार्ग पर एकाएक बस खराब हो जाती है। कल्पना कीजिए आप के मन में किस तरह की शंकाए जन्म लेंगी और आप गन्तव्य तक पहुँचने के लिए क्या-क्या उपाय करेंगे।

निबन्ध से

1. क्या कारण है कि आजकल हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि देखा जा रहा है?

2. जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्थाएँ क्यों हिलने लगी हैं?

3. किन घटनाओं के आधार पर लेखक को लगा कि मनुष्यता अभी समाप्त नहीं हुई है?

4. 'बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है।' क्यों?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा हैं, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।

(ख) केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा।

(ग) भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

(घ) महान भारतवर्ष के पाने की सम्भावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

भाषा की बात

1. आँधी आयी और पानी बरसा। यहाँ दो वाक्य में- ‘आँधी आयी’, ‘पानी बरसा’ को ‘और’ शब्द जोड़ता है। इसी प्रकार यह दो पदों को भी जोड़ता है। जैसे-दो और दो चार होते हैं इस प्रकार ऐसा पद जो एक वाक्य या पद का संबंध दूसरे वाक्य या पद से जोड़ता है, समुच्चय बोधक अव्यय कहलाता है।

नीचे कुछ अव्यय शब्द दिए गये हैं, उनका प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए-

क्योंकि, किन्तु, परन्तु, अथवा, इसलिए, चूंकि, तथा, अतः

2. ‘ईमानदार’ तथा ‘मूर्ख’ शब्द गुणवाचक विशेषण हैं, इनमें क्रमशः ‘ई’ तथा ‘ता’ प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा शब्द ‘ईमानदारी’ तथा ‘मूर्खता’ बनाया गया है। नीचे लिखे गये विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए -

निर्भीक, जिम्मेदार, कायर, अच्छा, लघु, बुरा।

3. इस पाठ में सरल, मिश्र और संयुक्त तीनों प्रकार के वाक्य आये हैं। नीचे दिये गये वाक्यों को पढ़िए और बताइए कि वे किस प्रकार के वाक्य हैं-

(क) उसके सारे गुण भुला दिये जायेंगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया जाने लगेगा।

(ख) एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था।

(ग) इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता।

(घ) यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं।

इसे भी जानें

साहित्य अकादमी पुरस्कार- साहित्य अकादमी द्वारा अंग्रेजी सहित बाईस भाषाओं में गत पाँच वर्षों में प्रकाशित उत्कृष्ट रचनाओं पर दिया जाता है। इसकी स्थापना सन् 1955 ई0 में हुई थी।